


---

# Durlabhopenishad Stotram

——  
दुर्लभोपनिषद्स्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : Durlabhopenishad Stotram

File name : durlabhopenishadstotram.itx

Category : deities\_misc, gurudev, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : Durga Sharma

Proofread by : Durga Sharma

Latest update : June 20, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 20, 2026

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Durlabhopenishad Stotram

---

### दुर्लभोपनिषद्स्तोत्रम्

---



गुरुर्वै सदां पूर्णं भद्वैव तुल्यं  
प्राणो भद्वैर्वै वलितं सदैव ।  
चिन्त्यं विचिन्त्यं भवमेकरूपं  
गुरुर्वै शरद्वयं गुरुर्वै शरद्वयम् ॥ १ ॥

गुरुर्वै प्रपन्ना मलितं वद्वैव  
अत्योर्वतां वै प्रलितं सदैव ।  
द्वैवोत्वमेव भवतं सखि चिन्त्यरूपं  
गुरुर्वै शरद्वयं गुरुर्वै शरद्वयम् ॥ २ ॥

सतं वै सदानं द्वैवलयोवै  
प्रातोर्भवेवै सखितं न दीर्घवै ।  
पूर्णातं परां पूर्णं भद्वैव रूपं  
गुरुर्वै शरद्वयं गुरुर्वै शरद्वयम् ॥ ३ ॥

अद्वैयं वद्वैव चिन्त्यं सखितं  
पूर्वोत्तररूपं चरद्वयं सदैवम् ।  
आत्मो सतां पूर्णं भद्वैव चिन्त्यं  
गुरुर्वै शरद्वयं गुरुर्वै शरद्वयम् ॥ ४ ॥

चैतन्यरूपं अपरं सदैव  
प्राणोद्वैव चरद्वयं सदैव ।  
सतीर्थो सदैव भवतं वद्वैव  
गुरुर्वै शरद्वयं गुरुर्वै शरद्वयम् ॥ ५ ॥

चैतन्यरूपं भवतं सदैव  
ज्ञानोश्चवासं सखितं तद्वैव ।  
द्वैवोत्थां पूर्णं भद्वैव शक्तिं  
गुरुर्वै शरद्वयं गुरुर्वै शरद्वयम् ॥ ६ ॥

न तातो वतान्यै न मातं न भ्रातं  
न देहो वदान्यै पत्रिव्रतेवम् ।  
न जानामि वितीं न प्रितं न रुपं  
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ॥ ७ ॥

त्वदीयं त्वदेयं भवत्वं भवेयं  
शिन्यं विशिन्यं सखितं सदैव ।  
आतो नवातं भवमेक नित्यं  
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यम् ॥ ८ ॥

एति दुर्लभोपनिषद्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Note:-

Durlabhopenishad is not a literal upanishad, but is named as Durlabha Upanishad stotram.

The available material associated with the Nikhileshwaranand tradition treats it primarily as a Guru-stuti and a spiritual text for disciples. Even recordings explaining the text present it as a practical devotional composition connected with Guru-sadhana.

Encoded and proofread by Durga Sharma

---

—  
*Durlabhopenishad Stotram*

pdf was typeset on June 20, 2026

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

